OM-24 - 2021 FILE_Page 1 and 2 04/03/2021 10:43 PM Page 3

होली पर रंग जायें 'होली' में

भारत में देसी वर्ष फाल्गुन की पूर्णमासी को समाप्त होता है। इसलिए फाल्गुन की पूर्णमासी को होलिका जलाने का अर्थ पिछले वर्ष की कटु और तीखी स्मृतियों को जलाना, अपने दुःखों को भुलाना और हँसते-खेलते नये वर्ष का आह्वान करना है। अतः भारत के उत्तर प्रदेश में कई लोग 'होलिका दहन' को 'संवत जलाना' भी कहते हैं। इसके अतिरिक्त पुराने वर्ष के अंत में इस त्योहार का मनाया जाना वृहद दृष्टि में इस रहस्य का परिचय भी देता है कि यह त्योहार पहले-पहले कल्प अथवा कलियुग के अंत में मनाया गया था। जिसके बाद सतयुग के सुख-शांति के दिन शुरू हुए थे। कलियुग के अंत में होलिका जलाने से मनुष्य के दुःख, दरिद्रता, वासना तथा व्यथा सब दूर हो गए थे। परन्तु प्रश्न उठता है कि होलिका जलाने से मनुष्य के विकार और विकर्म तथा दुःख और कलेष भला कैसे नाश हो सकते हैं?

स्पष्ट है कि लकड़ियां तथा गोबर जलाना ही 'होलिका दहन' नहीं है। लकड़ियों और गोबर को तो आज भी भारत के देहातों में रोज़ जलाया जाता है। परन्तु यहाँ दुःख और दरिद्रता तथा अपवित्रता का प्रज्वलन तो हुआ ही नहीं बल्कि दिनों-दिन इनमें वृद्धि ही हो रही है। अतः विचार करने पर आप मानेंगे कि योगाग्नि प्रज्वलित करने से हमारी पुरानी कटु स्मृतियां मिट सकती हैं। हमारे दुःख दूर हो सकते हैं और आने वाले नये वर्ष में हमारे जीवन में आनंद और उल्लास आ सकता है। इसीलिए होलिका के दिन गोबर और घास-फूस को अग्नि की ज्वाला में जलाना वास्तव में मन की उबड़-खाबड़ अथवा दूषित वृत्तियों को योगाग्नि द्वारा भस्मसात करने की प्रेरणा देता है। इसी कारण इस त्योहार को कई लोग 'राक्षस विनाशक' त्योहार भी मानते हैं। क्योंकि यह माया रूपी राक्षसी को ज्ञान रूपी हो-हल्ले से भगाने का त्योहार है।

कई लोगों का कहना है कि होलिका शब्द का अर्थ है 'भुना हुआ अन्न'। होलिका के अवसर पर लोग अग्नि में अन्न डालते हैं और गेहूँ और जौ की बाली को भूनते हैं। योगियों की बोल-चाल में ज्ञान अथवा योग को अग्नि की उपमा दी जाती है। क्योंकि जैसे भुना हुआ बीज आगे उत्पत्ति नहीं कर सकता वैसे ही ज्ञानयुक्त और योगयुक्त अवस्था में किया गया कर्म भी अकर्म हो जाता है, अर्थात् वह इस लोक में विकारी मनुष्यों के संग में फल नहीं देता। अतः 'होलिका' शब्द भी हमें इस

बात की स्मृति दिलाता है कि परमपिता ने पुरानी सृष्टि के अंत में मनुष्य को ज्ञान-योग रूपी अग्नि द्वारा कर्म रूपी बीज को भूलने की जो सम्मति दी थी हम उस पर आचरण करें। चंद लकड़ियों को, उपलों को इक्ट्ठा करके जलाने को ही हम होली न मानें बल्कि योगाग्नि में अपने पुराने एवं खराब संस्कारों को दग्ध करें। और आगे के लिए कर्मों को ज्ञानयुक्त होकर करें।

होली के अवसर पर एक-दूसरे पर रंग डालने की प्रथा भी इसी भाव को व्यक्त करती है, जैसे ज्ञान के अनेक नाम 'अंजन, अमृत, अग्नि इत्यादि है। वैसे ही ज्ञान को रंग भी कहा गया है। ज्ञानी मनुष्य अपने रंग से दूसरों पर भी अपने ज्ञान का रंग चढ़ाता है। उनकी आत्मा रूपी चोली को भी परमात्मा की लाली में लाल करता है। जब तक मनुष्य स्वयं भी ज्ञान में न रंगा जायें और दूसरों पर भी ज्ञान की वर्षा न करें तब तक वह आनन्दित व प्रफुल्लित नहीं हो सकता और तब तक परमात्मा से उसका मंगल मिलन भी नहीं हो सकता।

अतः आज एक-दूसरे पर रंग डालने तथा छोटे-बड़े परिचित-अपरिचित सभी से प्रेम भाव से मिलन की जो रीति है इसका शुरू में यही रूप था कि परमपिता परमात्मा शिव से ज्ञान प्राप्त करके मनुष्य ने ज्ञान पिचकारी से एक-दूसरे की आत्मा रूपी चोली को रंगा था और एक-दूसरे के प्रति मन-मुटाव तथा मलिन भाव त्याग कर मंगलकारी परमात्मा शिव से मंगल मिलन मनाया था। ज्ञान के बिना मनुष्य भला मंगल मिलन मना ही कैसे सकता है! अज्ञानी और मायावी मनुष्य अपने काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि राक्षसी स्वभाव से दूसरों का अमंगल करता है, उनके अधोपतन का निमित्त कारण बनता है; वह मंगल मिलन तो तभी मना सकता है जब ज्ञान अबीर आत्मा को रंगे और पुराने विचारों, आचारों, समाचारों और मनोविकारों को योग की अग्नि का ईंधन बना दे। इसीलिए होली को 'हो-ली' के रूप में मनाना ही उसका यथार्थ रूप है। हो-ली माना हो चुका। उसको भूल जाना। होली का दूसरा अर्थ है पवित्रता। तो इसीलिए परमात्मा द्वारा लगाए गए ज्ञान रंग से व योग अग्नि से अपनी आत्मा रूपी चोली को होली बनाना है।

तो होली के अवसर पर एक-दूसरे पर रंग डालना, दूसरा, अंतिम दिन होलिका जलाना, तीसरा, मंगल मिलन मनाना तो इन तीनों के आध्यात्मिक रहस्य को लेकर ही होली को मनायें।

सुन्नी-शिमला(हि.प्र.)। ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज्य मंत्री वीरेन्द्र कंवर को ब्रह्माकुमारीज द्वारा महाशिवरात्रि पर्व पर आयोजित किए जा रहे आध्यात्मिक महासम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में आने का निमंत्रण देते हुए उपसेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शकुंतला। साथ हैं राजयोगी ब्र.कु. रेवादास।

पन्ना-म.प्र.। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान बृजेन्द्र प्रताप सिंह,कैबिनेट मंत्री,मध्य प्रदेश सरकार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सीता बहन,उपसेवाकेन्द्र संचालिका।

केशोद-गुजरात। सेवाकेन्द्र पर आमंत्रित सांसद रमेश धडुक, विधायक देवाभाई मालम तथा अन्य को राजयोग का परिचय देते हुए ब्र.कु. रूपा बहन।

संगारेड्डी-तेलंगाना। सांसद बी.बी. पाटिल,जहिराबाद को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् उनके साथ ब्र.कु. सुनंदा, नंदकिशोर दाशेटवार,होमगार्ड कमांडेंट देगलूर, ब्र.कु. मेनका, ब्र.कु. विद्या तथा ब्र.कु. उषा।

चन्द्रपुर-महा.। ब्रह्माकुमारीज पीस पार्क को कुछ नए सुधारों के साथ नागरिकों के लिए खोलने से पूर्व पार्क स्थित राजयोग कक्ष, विश्व नवनिर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी आदि का निरीक्षण करते हुए कामगार नेता एवं पूर्व सांसद नरेश बाबू पुगलिया। साथ हैं पूर्व महापौर अंजलिताई घोटेकर, ब्र.कु. कुसुम दीदी,संचालिका,ब्रह्माकुमारीज चंद्रपुर गढ़चिरौली वाणी क्षेत्र, ब्र.कु. कुंदा दीदी तथा अन्य।

कुरुक्षेत्र-हरियाणा। विश्व शांति धाम में ब्रह्माकुमारीज के 'यूथ फॉर ग्लोबल पीस' प्रोजेक्ट के अंतर्गत दूसरे मास की थीम 'हार्मनी इन रिलेशनशिप द ट्रू लव' विषयक कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कुमारी मिशा,डिस्ट्रिक ऑफिसर,नेहरू युवा केन्द्र,यूथ अफेयर्स एंड स्पोर्ट्स को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र की मुख्य संचालिका ब्र.कु. सरोज दीदी।

आस्का-ओडिशा। सांसद अपराजिता सारंगी,भुवनेश्वर,आई.ए.एस. को गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रवाती।

मौदा-महा.। ब्रह्माकुमारीज के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा 'शाश्वत यौगिक खेती द्वारा पर्यावरण संतुलन और सुखदाई मानव जीवन' कार्यक्रम का आयोजन ब्र.कु. चंदू भाई के खेत पर हुआ। इस दौरान उपस्थित रहे कामठी सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रेमलता दीदी, मौदा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अर्चना दीदी, ब्र.कु. वंदना बहन, ब्र.कु. विनायक तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों सहित गांव के लोग।

प्रयागराज-दारा गंज(उ.प्र.)। गंगा-यमुना संगम पर आयोजित राज्य स्तरीय कृषि मेला में ब्रह्माकुमारीज द्वारा शाश्वत यौगिक खेती की भव्य प्रदर्शनी का आयोजन हुआ।

अमेठी-उ.प्र.। आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् विधायक राकेश प्रताप सिंह को ओम शान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. सुमित्रा व ब्र.कु. सुषमा।

मैनपुरी-उ.प्र.। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान नगरपालिका अध्यक्ष श्रीमति मनोरमा देवी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अवन्ती बहन।

मिआमी-फ्लोरिडा(यू.एस.ए.)। ब्रह्माकुमारीज के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के 52वें पुण्य स्मृति दिवस एवं मार्टिन लुथर किंग डे पर 'विज़न्स ऑफ ए बेटर वर्ल्ड' विषय पर आयोजित एक विशेष ऑनलाइन सत्र में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. वेरोनिका,एरिया कोऑर्डिनेटर,ब्रह्माकुमारीज।